بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 13.01.2023 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

निष्ठा एवं वफ़ादारो की मूर्ति कुछ सहाबियों के जीवन परिचय का वर्णन। मेहदीआबाद बर्कीना फ़ासो में 9 अहमदियों की दुःखद शहादत के विषय में शहीदों के उच्च स्तर तथा बर्कीना फ़ासो की विकट स्थिति के लिए जमाअत के दोस्तों को दुआ की तहरीक।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्सिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 13 जनवरी 2023, स्थान मस्जिद मुबारक यइस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु ने फ़रमाया- जैसा कि मैंने पिछले ख़ुत्बः में बताया था कि कुछ सहाबियों के वर्णन का कुछ भाग शेष रह गया है, वह बयान करूँगा। आज इस बारे में हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ी. के विषय में पहले बयान होगा। आप रज़ी. का सम्बंध बनू असद नामक क़बीले स था। आप रज़ी. की देह मध्यम तथा सिर के बाल अति घनेरे थे। एक अभियान के अवसर पर आप रज़ी. को अमीर के पद पर नियुक्त करते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबियों से फ़रमाया कि मैं तुम पर ऐसे व्यक्ति को नियुक्त कर रहा हूँ जो तुमसे उत्तम तो नहीं, किन्तु भूख एवं प्यास को सहन करने में तुमसे अधिक सशक्त है। एक रिवायत के अनुसार इस्लाम में सबसे पहले झंडे का प्रारम्भ हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ी. ने किया तथा सबसे पहला माल जो विजयी युद्ध से मिला, आप रज़ी. ने वितत किया। हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ी. के नेतृत्व में जाने वाले एक अभियान का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं- इस अभियान में मुसलमानों ने अवैध महीने में विवशता पूर्ण स्थिति में लड़ाई की थी। जब इस बात की सूचना आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिली तो आप स. बड़े नाराज़ हुए और फ़रमाया कि मैंने तुम्हें अवैध महीने में लड़ने की अनुमति नहीं दी हुई। इस पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ी. और उनके साथी बड़े लज्जित हुए।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ी. की तलवार ओहद के युद्ध वाले दिन टूट गई थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें खजूर की एक टहनी प्रदान की जो उनके हाथ में तलवार के समान हो

गई। उसी दिन से आप रज़ी. अर्जून की उपाधि से विख्यात हुए। अबू नईम कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ी. अपने रब की क़सम उठाने वाले तथा इलाही स्नेह को मन में स्थान देने वाले तथा सबसे पहले इस्लामी झंडा क़ायम करने वाले थे।

एक अवसर पर इमाम शअबी ने बनू असद की छः विशेषताएँ गिनवाईं जिनमें तीसरे और चौथे नम्बर पर इस बात का वर्णन किया कि इस्लाम में सबसे पहला झंडा बनी असद में से एक व्यक्ति हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ी. को दिया गया तथा बनू असद की चौथी विशेषता यह है कि इस्लाम में सबसे पहली युद्ध से हाथ आई सम्पदा भी हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ी. ने वितत की। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश रज़ी. ओहद के दिन शहीद हुए तो हज़रत ज़ैनब सुपुत्री ख़ज़ीमा आप रज़ी. के निकाह में थीं उनकी शहादत के बाद ह़ज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ैनब से शादी कर ली।

अगला वर्णन हज़रत सालेह शक़रान रज़ी. का है। कुछ कथनाकारों के अनुसार हज़रत सालेह शक़रान रज़ी. और उम्मे ऐमन रज़ी. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने वालिद की ओर से विरासत में मिले थे। बदर के युद्ध के बाद आप स. ने उन्हें स्वतंत्र कर दिया था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन के पश्चात जिन लोगों को आप स. का स्नान कराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ उनमें हज़रत सालेह शक़रान रज़ी. भी शामिल थे। एक रिवायत के अनुसार हज़रत उमर रज़ी. ने हज़रत सालेह शक़रान रज़ी. के साहिबज़ादे को हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ी. की ओर भेजा तथा लिखा कि मैं तुम्हारी ओर एक नेक आदमी को भेज रहा हूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाँ उसके वालिद का जो स्तर है, उसके अनुसार उसके साथ व्यवहार करना। हज़रत उमर रज़ी. की ख़िलाफ़त के दौर में आप रज़ी. का देहान्त हुआ। हज़रत सालेह शक़रान रज़ी. बयान करते हैं कि मैंने रस्लुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को एक गधे पर सवार नमाज़ पढ़ते हुए देखा, यह भी एक मसला है कि सवारी पर नमाज़ अदा की जा सकती है कि नहीं।

अगला वर्णन हज़रत मालिक बिन दुख़शम का है। आप रज़ी. का नाम मालिक बिन दुख़शम है। आपका नाम मालिक बिन दुख़ीशम अथवा इब्ने दुख़्शम भी बयान हुआ है। सुहेल बिन उमरू को बन्दी बनान क अवसर पर हज़रत मालिक न जा काव्य पंक्तियां कहो थों उनम यह वणन मिलता ह कि मन स़हल का बन्दो बनाया तथा उसके बदले म किसी क़ौम के दूसरे आदमो को बन्दी बनाना नहीं चाहता। ओहद के युद्ध वाले दिन मालिक बिन दुख़शम हज़रत ख़ारजा के निकट से गुज़रे, उन्हें तेरह घाव लगे थे। मालिक ने उनसे कहा कि आपका पता है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हत्या कर दी गई है। इस पर हज़रत ख़ारजा ने फ़रमाया कि यदि ऐसा है भी तो अल्लाह बहरहाल जीवित है तथा वह कभी नहीं मरेगा। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्लाम का पैग़ाम पहुंचा दिया है इस लिए तुम भी अपने दीन के लिए युद्ध करो। एक अन्य रिवायत के अनुसार इसके बाद हज़रत मालिक सअद बिन रबीअ के पास से गुज़रे, उन्हें बारह घाव लगे थे। हज़रत मालिक ने उनसे भी यही बात कही तो सअद बिन रबीअ ने भी फ़रमाया कि मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने रब का पैग़ाम पहुंचा दिया है, अतः इस्लाम के लिए लड़ो।

लोगों में से कुछ लोगों ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हज़रत मालिक के बारे में यह निवेदन किया कि मालिक पाखन्डियों की शरण स्थली है। आप स. ने फ़रमाया- क्या वह नमाज़ नहीं पढ़ता? लोगों ने कहा कि पढ़ता है, परन्तु वह ऐसी नमाज़ है जिसमें कोई भलाई नहीं। इस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो बार फ़रमाया कि मुझे नमाज़ पढ़ने वालों की हत्या न करने का आदेश है। एक रिवायत के अनुसार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत मालिक बिन दुख़शम के साथ आसिम बिन अदी को मस्जिद ज़िरार को गिराने के लिए भिजवाया था। आप रज़ी. के विषय में वर्णन है कि उनकी नस्ल आगे नहीं चली।

फिर हज़रत उकाशा रज़ी. का वर्णन है। उनकी हज़रत अबू बकर रज़ी. की ख़िलाफ़त के दौर में 12 हिजरी में शहादत हुई। इमाम शाफ़ई फ़रमाते हैं कि एक व्यक्ति जन्नती था किन्तु फिर भी धरती पर विनम्रता के साथ चलता था और वे उकाशा थे। बदर के युद्ध के तुरन्त बाद 2 हिजरी में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन हजश को एक अभियान पर भेजा, इस अभियान में उकाशा रज़ी. भी अब्दुल्लाह के साथ थे। ओहद के युद्ध वाले दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम निरन्तर तीर चलाते रहे जिसके कारण कमान का एक भाग टूट गया। हज़रत उकाशा रज़ी. ने कमान बांधने के लिए डोर आप स. से ली, परन्तु वह डोर छोटी पड़ गई। आप रज़ी. ने निवेदन किया कि डोर छोटी पड़ गई है तो आप स. ने फ़रमाया- इसको खींचो। हज़रत उकाशा रज़ी. कहते हैं कि मैंने डोर को खींचा और ख़ुदा की क़सम वह इतनी लम्बी हो गई कि मैंने कमान के सिरे पर उसे दो तीन लपेट भी दिए।

एक अभियान के अवसर पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीने में ख़तरे की घोषणा की तो घुड़ सवार आप स. के पास जमा होने लगे, उन सवारों में हज़रत उकाशा रज़ी. भी शामिल थे।

अगला वर्णन हज़रत ख़ारजा बिन यज़ीद रज़ी. का, आपका उपनाम अबू ज़ैद था। कुछ अन्य सहाबियों के साथ उन्होंने यहूदियों से तौरात में वर्णित कुछ बातों के बारे में सवाल किया था तो यहूदियों ने बताने से इंकार कर दिया जिस पर क़ुर्आन की वह्यी भी अवतरित हुई।

अगला वर्णन ज़ियाद बिन लबीद रज़ी. का है, इनका उपनाम अबू अब्दुल्लाह था। आपकी नस्ल मदीना तथा बग़दाद में आबाद थी। हज़रत ज़ियाद रज़ी. को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक कौम की ओर उन्हें दीन सिखाने के लिए भी भिजवाया था। आप रज़ी. ने 41 हिजरी मे हज़रत मुआवियः के दौर में मृत्यु पाई।

फिर हज़रत ख़ालिद बिन बुकीर रज़ी. का वर्णन है। ये बनू सअद नामक क़बीले से सम्बंध रखते थे, इन्हें भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दीन की शिक्षा देने के लिए और क़ुर्आन पढ़ाने के लिए एक क़ौम की ओर अन्य पाँच सहाबियों के साथ रवाना फ़रमाया। उन लोगों ने, जो दीन सीखने के लिए उन्हें साथ लेकर गए थे, बाद में धोखे से शहीद कर दिया था।

फिर हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ी. का वर्णन है। हज़रत मुस्लेह मौऊद फ़रमाते ह कि एक बार हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क एक सेवक अम्मार के पास से गुज़रे और उसका हाल पूछा। अम्मार ने बताया कि दुश्मन मुझे मारते रहे और जब तक आप स. के विरुद्ध बातें न कहलवा लीं, मुझे न छोड़ा। हुज़ूर सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम ने पूछा कि तुम दिल में क्या अनुभव करते हो। अम्मार ने

बताया कि दिल में तो सुदृढ़ ईमान है। इस पर आप स. ने फ़रमाया कि यदि दिल ईमान पर संतुष्ट था तो ख़ुदा तआला तुम्हारी निर्बलता को क्षमा कर देगा।

हज़रत उसमान रज़ी. की ख़िलाफ़त के दौर में घटने वाला उपद्रव जब बढ़ा तथा सहाबियों को भी पत्र आने लगे तो सहाबियों ने हज़रत उसमान रज़ी. को गवर्नरों से सम्बंधित इन बातों से अवगत किया। विचार विमर्श के बाद कुछ सहाबियों को जानकारी प्राप्त करने के लिए भिजवाया गया। अन्य शेष ने तो सकारात्मक रिपोर्ट भिजवाई परन्तु अम्मार रज़ी. की ओर स कोई उत्तर न आया तथा उसमें इतना अधिक विलम्ब हुआ कि यह विचार किया कि वे मारे गए हैं। परन्तु वास्तविकता यह थी कि वे अपने सरल स्वभाव एवं राजनीति से अनभिज्ञ होने के कारण उपद्रवियों के फंदे में फंस गए थे। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि अम्मार बिन यासिर का इन उपद्रवियों के धोखे में आ जाना एक विशेष कारण से था और वह कारण यह था कि जसे ही आप रज़ी. मिस्र पहुंचे तो उन उपद्रवियों ने उन्हें अपने घेरे में ले लिया तथा अपनी वाकपटुता से मिस्र के गर्वनर के विरुद्ध शिकायतें लगानी शुरु कर दीं और अम्मार बिन यासिर रज़ी. ने अपने सरल स्वभाव के कारण इन शिकायतों को उचित मान लिया था।

सिफ़्फ़ीन के युद्ध के अवसर पर हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ी. पर इसका यथार्थ प्रकट हो गया था कि इन फ़ितना फैलाने वाले लोगों ने किस प्रकार चतुराई से फ़साद फैला कर हज़रत उसमान रज़ी. को शहीद कर दिया है। सिफ़्फ़ीन की लड़ाई में आप रज़ी. अत्यंत दलेरी के साथ शामिल रहे और शहादत का स्तर प्राप्त किया।

ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि एक दुखद समाचार भी है। बर्कीना फ़ासो में पर्सों हमारे 9 अहमदी अत्यंत निर्दयता के साथ शहीद कर दिए गए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। उनके ईमान की परीक्षा भी थी जिस पर वे दृढ़ संकल्प रहे। यह नहीं कि अंधाधुन्द फ़ायरिंग करके, बल्कि हर एक को बुला बुला कर शहीद किया गया, इसका कुछ विस्तार आ गया है और कुछ अभी आ रहा है। इनका वर्णन इन्शाअल्लाह मैं अगले ख़ुत्बः में करूंगा। हुज़ूर-ए-अनवर ने शहीदों के स्तर बुलन्द करने के लिए दुआ की और जमाअत को दुआ की प्रेरणा देते हुए फ़रमाया कि वहाँ के हालात अभी भी ख़राब हैं, आतंकवादी धमकी देकर गए हैं, उनके लिए दुआ भी करते रहें, अल्लाह तआला हर एक अत्याचार से उनको सुरक्षित रखे। आमीन

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क करें-9781831652

अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान के विषय में जानकारी के लिए टोल फ्री नम्बर-18001032131